C7(b) U1 Pedagogy of philosophy

Q दर्शनशास्त्र से आप क्या समझते है इसके प्रकृति एवं क्षेत्र का वर्णन करे।

उत्तर → दर्शनशास्त्र वह ज्ञान है जो परम् सत्य और प्रकृति के सिद्धांतो और उनके कारणों की विवेचना करता है। दर्शन यथार्थ की परख के लिये एक दृष्टिकोण है। दार्शनिक चिन्तन मूलतः जीवन की अर्थवत्ता की खोज का पर्याय है। वस्तुतः दर्शनशास्त्र स्वत्व अर्थात् प्रकृति तथा समाज और मानव चिंतन तथा संज्ञान की प्रक्रिया के सामान्य नियमो का विज्ञान है। दर्शनशास्त्र सामाजिक चेतना के रूपों मे से एक है

दर्शन उस विद्या का नाम है जो सत्य एवं ज्ञान की खोज करता है ~~व्यापक~~ व्यापक अर्थ मे दर्शन तर्कपूर्ण विधिपूर्वक एवं क्रमबद्ध विचार की कला है। इसका जन्म अनुभव एवं परिस्थिति के अनुसार होता है यही कारण है कि संसार के भिन्न-भिन्न व्यक्तियों ने समय-समय पर अपने-अपने अनुभवो एवं

परिस्थितियों के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार के जीवन-दर्शन को अपनाया।

<u>दर्शनशास्त्र का क्षेत्र एवं प्रकृति :-</u>

दर्शनशास्त्र अनुभव की व्याख्या करता है इस व्याख्या में जो कुछ अस्पष्ट होता है उसे स्पष्ट करने का यत्न किया जाता है। हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ बाहर की ओर खुलती है हम प्रायः बाह्य जगत् में विलीन रहते हैं। कभी कभी हमारा ध्यान अंतर्मुख होता है और हम एक नए लोक का दर्शन करते हैं तथ्य तो दिखाई देते ही है नैतिक भावना आदेश भी देती है। वास्तविकता और संभावना का भेद आदर्श के प्रत्यय को व्यक्त करता है। इस प्रत्यय के प्रभाव में ध्येय की ओर देखते हैं। इस तरह दर्शन के विषय बाह्य जगत चेतन आत्मा और परमात्मा बन जाते हैं इन पर विचार करते हुए हम स्वभावतः इनके संबंधों पर भी विचार करते हैं।

प्राचीन काल मे रचना और रचयिता का संबंध प्रमुख विषय था मध्यकाल मे आत्मा और परमात्मा का संबंध प्रमुख विषय बना और आधुनिक काल मे पुरुष और प्रकृति बना और आधुनिक काल मे पुरुष और प्रकृति विषयो और विषय का संबंध विवेचन का केन्द्र बना। दार्शनिक विवेचन के मुख्य विषय है —

ज्ञानमीमांसा
तत्व मीमांसा
नीतिमीमांसा
सौंदर्यशास्त्र
तर्कशास्त्र
गौण विषय है — यथार्थवाद, संदेहवाद
~~ज्ञानमीमांसा~~ तत्व मीमांसा — न्याय सूत्र यह प्रतिपादित है कि यदि मनुष्य संसार मे आकर सद्व्यवहार और सत्कर्म करके दुःख निवृति प्राप्त करना चाहता है तो सर्वप्रथम उसे तत्वो या पदार्थो का ज्ञान प्राप्त करना होगा जिनसे स्थावर तथा चैतन्य रूप जगत की रचना हुई हो

ज्ञान मीमांसा — भारतीय दर्शन मे न्याय दर्शन ही ऐसा प्रमुख दर्शन है जो ज्ञान मीमांसा को तार्किक रूप व्यक्त करता है यह स्मरण तथा अनुभव पर आधारित होता है।

उपर्युक्त दार्शनिक आधार से दर्शनशास्त्र के क्षेत्र की व्यापकता व सार्थकता को सिद्ध करते है यह दार्शनिक शिक्षण आधार है यही आधार नवीन राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के दृष्टिकोण को भी आधारित किया गया है यह NCF 2005 के दर्शनशास्त्र में एक ओर जीवन के संबंध में उपरोक्त विविध विधाओं का विश्लेषण मूल्यांकन और संयोगात्मक समन्वय के साथ जुड़ाव होता है तो दूसरी ओर वह समग्रता परम उत्कर्ष और अनुभवातीत से भी जुड़ा होता है बुनियादी सामर्थ्य व्यवहार का ज्ञान और उनके रूप ही दो प्रमुख तरीके रहे हैं जिनके माध्यम से तर्कशक्ति का विकास कराया जाता है। यह एक विषय के रूप में उच्च माध्यमिक स्तर पर (+2) अध्ययन के लिए निर्मित किया गया है।